एम.ए. हिंदी (एम.एच.डी.)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–02

(आधुनिक हिंदी काव्य)

सत्रीय कार्य (जुलाई–2024 और जनवरी–2025) सत्रों के लिए

जुलाई–2024 सत्र के लिए अंतिम तिथि : 31 मार्च, 2025

जनवरी–2025 सत्र के लिए अंतिम तिथि : 30 सितम्बर, 2025

मानविकी विद्यापीठ

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

मैदान गढ़ी, नई दिल्ली–110068

एम.एच.डी.–02 : आधुनिक हिंदी काव्य
सत्रीय कार्य 2024–25

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–02
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.–02/टी.एम.ए./2024–25

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए : **अंक**

1. भारतेंदु की कविता में राष्ट्रीयता की भावना कूट–कूट कर भरी हुई है। सोदाहरण स्पष्ट कीजिए। 16

2. साकेत लिखने की प्रेरणा गुप्त जी को कहाँ से प्राप्त हुई है? यह काव्य किस श्रेणी का है इसका औचित्य को सिद्ध किजिए। 16

3. ''निराला राग और विराग के कवि हैं'' इस कथन की सार्थकता सिद्ध कीजिए। 16

4. अज्ञेय की काव्य भाषा का वैशिष्ट्य बताइए। 16

5. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

(क) सब गुरुजन को बुरो बतावै। 12
अपनी खिचड़ी अलग पकावै।
भीतर तत्व न झूठी तेजी।
क्यों सखि सज्जन नहिं अंगरेजी।
तीन बुलाए तेरह आवैं।
निज निज बिपता रोई सुनावैं।
आँखों फूटे भरा न पेट।
क्यों सखि सज्जन नहिं ग्रेजुएट।

(ख) विषमता की पीड़ा से व्यस्त 12
हो रहा स्पंदित विश्व महान;
यही दुख सुख विकास का सत्य
यही भूमा का मधुमय दान।
नित्य समरसता का अधिकार,
उमड़ता कारण जलधि समान;
व्यथा से नीली लहरों बीच
बिखरते सुख मणि गण द्युतिमान।

(ग) है अमानिशा; उगलता गगन घन अन्धकार; 12
खो रहा दिशा का ज्ञान; स्तब्ध है पवर–चार;
अप्रतिहत गरज रहा पीछे अम्बुधि विशाल;
भूधर ज्यों धन–मग्न; केवल जलती मशाल।
स्थिर राघवेन्द्र को हिला रहा फिर–फिर संशय,
रह–रह उठता जग जीवन में रावण–जय–जय;
जो नहीं हुआ आज तक हृदय रिपु–दम्य–श्रान्त
एक भी, अयुत–लक्ष में रहा जो दुराक्रान्त
कल लड़ने को हो रहा विकल वार बार–बार
असमर्थ मानता मन उद्यत हो हार–हार।